WLC15-2-3 HI

# यीशु के जीवन, मृत्यु और जी उठने कई केस - प्रोग्राम 3

**अनाऊंसर:** आज द जॉन एन्करबर्ग शो में, हम सवाल पूछेगे कि क्या यीशु मुर्दों में से जी उठा था? किस कारण आज नए नियम के बहुत एस विद्वान् किस बात पर इसे स्वीकार करते हैं,और निष्कर्ष निकालते हैं कि यीशु मुर्दों में से जी उठा है/

**अनाऊंसर:** मेरे मेहमान बताएगे, फिलोसोफर डॉ विलियम लैंक्रेग, जिन्होंने फिलोसोफी में पी एच डी पाई है, बिरमिंगहैम इंग्लॅण्ड से, हमारे साथ जुड़ जाए विशेष प्रोग्राम द जॉन एंकरबर्ग शो में/

****

**डॉ. जॉन एन्करबर्ग:** प्रोग्राम में स्वागत है, मैं हूँ जॉन एन्करबर्ग, हमारे साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद/ मेरे मेहमान डॉ. विलियम लैंक्रेग हैं जो सबसे अच्छे फिलोसोफर हैं, हमारे दिनों में और बहुत से लोग लकी होते हैं कि एक डॉक्टरेट ले, इन्होने दो डॉक्टरेट ली हैं, और आज हम जिस विषय पर बात करनेवाले हैं, खासकर यीशु का पुनरुत्थान, ये तो बहुत दिलचस्प है, कि इन्होने इसे अपना दूसरा डीसरटेशन बनाया, और दुसरे डॉक्टरेट डिग्री के लिए, म्युनिक जर्मनी से/ बिल हमे इसके बारे में बताइए/

**डॉक्टर विलयम लैन क्रेग:** मैंने कोलम कोस्मोलोजिक्ल बहस का अध्यन करने के बाद, याने मेरे फिलोसोफिकल डॉक्टरेट के बाद मैंने सोचा कि डॉक्टरल पढाई जारी रखूं, जर्मनी में, दुनिया के विख्यात जर्मन थियोलोजिन के साथ वोल्फहार्ट पन्नबर्ग, और मैंने अपने डॉक्टरल थीसिस लिखे,यीशु के पुनरुत्थान के इतिहास पर/ अब एक विश्वासी के नाते/ मैं पहले से ही यीशु के पुनरुत्थान पर विश्वास करता था/

लेकिन मुझे कहना होगा जॉन, मेरी स्टडी के परिणाम में मैं खुद बहुत चकित हो गया, सच में पीछे ले जाया गया, इन सच्चाई से, कि ये सच्चाई जो यीशु के जी उठने के बारे में बताते हैं, उन्हें आज माना जाता है, बहुत से नए नियम के इतिहासकार द्वारा/ जिन्होंने एतिहासिक यीशु के बारे में खोज की है/ और उसने मुझे चौका दिया, कि ये ऐसा निष्कर्ष नही है जो किसी सीमित विचारवाले विद्वान् या इवेंजलिक्ल विद्वान् के लिए हो, लेकिन ये दर्शाते हैं, नए नियम के विद्वानों में से ऐसे बहुत से विद्वान भी हैं जो नॉन एवेंजलिक्ल सेमनरी और यूनिवर्सिटी में पढाते हैं/ और गैरमसीही विद्वान् भी, जैसे कि आज के यहूदी विद्वान/ याने ये बुनियादी सच्चाई, जो यीशु के पुनरुत्थान के बारे में साबित करते हैं, वो तो मजबूती से स्थापित किए गए हैं, और नए नियम पर दोष लगानेवाले भी इसे मानते हैं/

**डॉ. जॉन एन्करबर्ग:** जी, और आपने कहा कि ऐसे चार एतिहासिक सत्य हैं, जिसे कोई भी गंभीर इतिहासकार जो इस विषय पर खोज कर रहा है उसे ये देखना होगा,और इन 4 सच्चाई को अधिकांश दोष निकालनेवाले विद्वानों ने स्वीकार किया है, चाहे उनमे जितनी तरह के लोग हो, ये 4 एतिहासिक सच्चाई क्या हैं?

**डॉक्टर विलयम लैन क्रेग:** इन्हें आसानी से इन चार शीर्षकों में विभाजित किया जा सकता है/ नंबर एक कि यीशु नासरी,जिसे सही तरह से उसके क्रुसिकरण के बाद में कब्र में दफनाया गया, यहूदी सेन्हीडरन के सदस्य द्वारा, जिसका नाम अर्मतिया का युसुफ था, दूसरी बात है, कि बाद में वो कब्र खाली पाई गई, यीशु की महिला अनुयायियों द्वारा, उसके क्रुसिकरण के बाद रविवार सुबह के समय, तीसरी बात तो ये है कि बहुत से लोगों ने और लोगों के समूहों ने, अलग अलग परिस्थिति में, अलग अलग जगह पर, यीशु के प्रकट होने का अनुभव किया है, जो मरने के बाद जीवित था, और अंत में नंबर चार कि असली चेले अचानक ही और इमानदारी से, ये विश्वास करने लगे कि परमेश्वर ने यीशु को मुर्दों में से जिलाया है/ जब कि इनके पास इसके विरुद्ध में पहले से बहुत बातें थी/

**डॉ. जॉन एन्करबर्ग:** जी, पहले के बारे में बताइए, यीशु को आदर से दफनाना/

**डॉक्टर विलयम लैन क्रेग:** यीशु का दफनाया जाना इतना महत्वपूर्ण है/ क्योंकि यदि यीशु के कब्र की जगह यरूशलेम में जानी जाती है, यहूदी और मसीही लोगों के लिए समान रूप में, तो ये असंभव है कि ये चलन शुरू हो जो यीशु के पुनरुत्थान पर आधारित था/ ये यरूशलेम में उस कब्र के सामने नही होता जिस में उसकी देह रखी हुई हो/ याने यीशु का दफनाया जाना बहुत महत्वपूर्ण कदम था, इस खाली कब्र के संबन्ध में/

और बहुत से विद्वान् मानते हैं कि यीशु का दफनाया जाना तो सच में एतिहासिक है/ सबसे पहले ये तो शुरू के व्यक्तिगत स्रोतों में परखे गए, ये सबसे महत्वपूर्ण क्रायटेरिया है जिसे इतिहासकार उपयोग करते हैं/ किसी भी घटना के ऐतिहासिक होने को परखने के लिए/ यदि कोई घटना शुरू के स्रोतों से जुडी हुई है, तो ये मनघडत कहानी होने की संभवना कम होती है/ लेकिन सच में इस सच्चाई को दिखाता है, और यीशु के दफनाने की केस में, हमारे पास बहुत से शुरू के स्रोत हैं, इस सच्चाई के लिए कि यीशु को कब्र में दफनाया गया/

पहली तो प्री-मारकन पैशन स्टोरी है, इसका अर्थ है यीशु के जीवन के आखरी हफ्ते की कहानी, जिसका उपयोग मरकुस अपना सुसमाचार लिखने के लिए करता है/ ये नए नियम के पीछे सबसे शुरू का स्रोत है, और शायद ये यीशु की मृत्यु के 10 साल के भीतर लिखा गया है/ आँखों देखे गवाहों द्वारा/ और दूसरा शुरू का स्रोत तो वो परंपरा होगी जो पौलुस बताता है, ग्रीस के कुरिन्थियों के चर्च के लिखी अपनी पहली पत्री में,यहाँ पौलुस ये फार्मूला बताता है, जो उसने खुद पाया और फिर कुरिन्थियों को दिया, और वो फार्मूला कहता है कि मसीह हमारे पापों के लिए मर गया, पवित्रशास्त्र के अनुसार, और गाड़ा गया और पवित्रशास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा/ और तब कैफा को तब बारहों को दिखाई दिया, और अगली लाइन इस फार्मूला में यीशु के गाढे जाने को बताती है/

ये फार्मूला जो पौलुस ने बताया ये यीशु के क्रुसिकरण के बाद पहले साल में बताया गया है/ इस तरह हम निश्चित होते हैं यीशु के गाढे जाने के बारे में, ये तो शुरू के दो स्रोतों में है/ जो नए नियम में है, इस में दूसरे स्रोतों के बारे में नही बताया है/ तो हमारे पास बहुत अच्छी वजह है कि विश्वास करे कि यीशु को कब्र में गाढ़ा गया था जैसे प्री-मरकन पैशन स्टोरी बताती है/

**डॉ. जॉन एन्करबर्ग:** चलिए यही पर रुककर मैं आप से पूछता हूँ कि हमारे बहुत से दर्शक ये दिलचस्प पाएगे कि हमारे बहुत से सुसमाचार लेखकों ने स्रोतों का उपयोग किया है, लेकिन लूका सच में इसे कहता है, अपनी शुरुवात में, कि उसने ये सब लिखने के पहले सारी बातों को जांचा उसने सारी जानकारी को एक साथ लाया जैसे बच्चा परीक्षा में लिखता है, और उसने दुसरे स्रोतों का उपयोग किया जिसे वो भरोसेमंद समझता है, लूका की केस में ये आँखों देखे गवाह थे, मरकुस इसे एक साथ रखता है, और विद्वान् बता सकते हैं, कि ये जानकारी

का एक निरंतर बहाव है, और मरकुस ये शुरू के स्रोत का उपयोग करता है, विद्वान् इसे के बारे में देख सकते हैं, इसके लिए आप क्या कहेगे?

**डॉक्टर विलयम लैन क्रेग:** ये सच है, बिलकुल सही है/ अब दूसरा कारण कि सोचे कि गाढे जाने की कहानी सही ही, ये तो एम्बेरेस्मेंट का क्रायटेरिया, ये क्रायटेरिया कहता है कि यदि कोई बात या घटना अजीब है, या शुरू के मसीही चर्च के लिए शर्म की बात है, तो ये ज्यादातर एतिहासिक है, और गाढे जाने की बात जो अरमथाया के युसुफ ने की थी, वो इस क्रायटेरिया को पास करता है, यीशु दफनाया नही गया, अपने परिवार के सदस्यों द्वारा, या उसके समर्पित चेलों के द्वारा, सच में वो इसके लायक थे, लेकिन इसके बजाए वो ऐसे व्यक्ति द्वारा दफनाया गया जो यहूदी सेन्हेडरन के सदस्य द्वारा दफनाया जाता है, और मरकुस कहता है उन सब ने यीशु को दण्ड आज्ञा देने के लिए सहमती दी थी कि क्रूस पर चढाए/ याने अर्मथिया के युसुफ के द्वारा दफनाया जाना बहुत जरूरी था, एतिहासिक रुप में, नही तो ऐसा कहते कि शुरू के विश्वासियों ने ये कहानी बनाई है, यहाँ सेन्हेडरियन के सदस्य ने यीशु को कब्र में सही तरह से दफनाया, याने यदि ये केस नही होती तो/

**डॉ. जॉन एन्करबर्ग:** ये केस/

**डॉक्टर विलयम लैन क्रेग:** याने, मैं इसे अद्भुत पाता हूँ कि हम सच में जानते हैं, उस व्यक्ति का नाम जो यीशु नासरी के दफनाने की विधि के लिए निश्चित किया गया था, ये चौकानेवाला है/

जॉन ए टी रोबिनसन, नए नियम के अध्यन के प्रोफेसर, कैंब्रिज यूनिवर्सिटी से, ये तो बहुत दूर हैं कंजरवेटिव या इवेंजलिक्ल से, ये कहते हुए सारांश बताते हैं कि कब्र में यीशु का दफनाया जाना ये तो सबसे शुरू का और सबसे अच्छी तरह देखी सच्चाई है, यीशु के बारे में/

**डॉ. जॉन एन्करबर्ग:** जी, ठीक है सच्चाई नंबर दो पर चलते हैं, कि बहुत से दोष निकालनेवाले ये स्वीकार करते हैं कि रविवार के दिन, याने क्रुसिकरण के बाद, यीशु की कब्र उसके स्त्री अनुयायियों द्वारा खाली पाई गई, एक दोष निकालनेवाले विद्वान् सोचते हैं कि ये सच्चाई खाली कब्र की कहानी की एतिहासिक बात बताती है/

**डॉक्टर विलयम लैन क्रेग:** खैर फिर से, खाली कब्र की बात तो व्यक्तिगत और शुरू के स्रोतों द्वारा जांची गई हैं,हमारे पास लगभग 6 अलग स्वतंत्र स्रोत हैं, जो यीशु के खाली कब्र के बारे में गवाही देते हैं, इन में से एक फिर से प्री मारकन पैशन स्टोरी है/ ये पैशन स्टोरी दफनाने के साथ खत्म नही होती है/ खाली कब्र की कहानी तो भाग है पैशन की घटना का, ये गाढे जाने की बात से जुडी है, उस समय की भाषा के अनुसार देखा जाए तो, ये सच में एक ही कहानी है, और ये कहानी खाली कब्र की खोज तक खत्म नही होती है/

इसी तरह इस प्री-पॉललाइन फार्मूला में जो पौलुस कुरिन्थियो के चर्च को लिखता है, इस बात की तीसरी लाइन कहती है, और पवित्रशास्त्र के अनुसार वो तीसरे दिन जी उठा/ अब यहाँ पर डॉ बातें हैं जो खाली कब्र इस बात के बारे में बताती है, पहले जब आप इस बात की चार लाइन की तुलना करते हैं, सुसमाचार की घटना के साथ, एक तरफ से, और प्रेरितों के काम में संदेश में, तो हम यही पाते हैं कि पहली लाइन क्रुसिकरण के बारे में बताती है/ और दूसरी लाइन कि वो गाढ़ा गया, जो गाढे जाने के बारे में बताती है, और तीसरी लाइन कि वो तीसरे दिन जो उठा/ ये खाली कब्र के बारे में बताती है/ और फिर कैफा को और 12 को दिखाई दिया, ये प्रकट होने की कहानी बताते हैं, याने पौलुस यहाँ संदेश का ढांचा दे रहा है/ यदि कहे तो,और इस ढांचे में तीसरा पॉइंट तो खाली कब्र की कहानी है/

एक और दर्शानेवाली बात है तीसरे दिन, उन्होंने इस शब्द का उपयोग क्यों किया, खैर संक्षिप्त में बताऊ, इसकी पूरी संभवना है कि तीसरे दिन,यहूदी विचारों के अनुसार, कि स्त्रियों ने कब्र को खाली पाया, इसलिए स्वाभाविक रूप में जी उठना उस दिन का माना जाता है/ याने पौलुस की जानकारी में, हमारे पास बहुत शुरू के सबूत हैं, खाली कब्र के लिए, और दुसरे अलग स्रोत हैं जैसे लूका और मत्ती, प्रेरितों के काम के संदेश/ याने खाली कब्र की कहानी तो अलग अलग स्रोतों में अच्छे से जांची गई/ इतिहासकार सोचते हैं कि वो इतिहास की घटना के बारे में अद्भुत काम करते हैं यदि वो दो मुख्य सबूतों को देखते हैं, किसी भी घटना के बारे में, लेकिन खाली कब्र की केस में, हमारे पास 6 स्वतंत्र और शुरू के स्रोत हैं/

**डॉ. जॉन एन्करबर्ग:** ठीक है, चलिए स्त्रियों के बारे में चर्चा करते हैं, ये बात क्यों लिखी गई कि स्त्रियों ने कब्र को खाली पाया, एक इतिहासकार सोचते हैं कि ये बात इस खाली कब्र की कहानी के एतिहासिक रूप में निश्चित होने को दर्शाती है/

**डॉक्टर विलयम लैन क्रेग:** ये तो सबसे अच्छा उदाहरण है एम्बेरेस्मेंट एट वर्क के क्रायटेरिया का/ एम्बेरेस्मेंट का क्रायटेरिया कहता है कि यदि कोई बात अजीब है या शर्मिंदगी लाती है, मसीही चलन में, तो ये संभावना नही है कि ये उन के द्वारा बनाई हो, स्त्रियों द्वारा खाली कब्र खोजी जाना तो ऐसी ही बात है, पहली सदी के यहूदी समाज में, स्त्रियों की गवाही बिना मूल्य की मानी जाती थी, कि उन पर विश्वास नही करते थे, यहूदी इतिहासकार,जोसिफ्स ने कहा था, कि स्त्रियों कि गवाही कोर्ट में मानी नही जाती थी, उनकी हल्की विचारधारा और साहस से कहने के कारण, याने स्त्रियों की गवाही तो व्यर्थ थी/

दूसरी बात, ये भी दिखाता है कि कैसे चेलों ने यीशु को छोड़ दिया था/ उसके बाद के किसी भी लेजेंडरी अकाउंट में, तो पतरस और युहन्ना आकर खाली कब्र को खोज निकालते, स्त्रियाँ नही/ जिनकी गवाही व्यर्थ मानी जाती थी/ याने ये सच्चाई कि स्त्रियाँ जो खाली कब्र को खोजती है और उसके लिए मुख्य गवाह होती है, ये इस सच्चाई द्वारा अच्छे से बताई जाती है कि पसंद हो या न हो, उन्होंने खाली कब्र को खोज निकाला/ और सुसमाचार के लेखक इसके बारे में बताते हैं, जब कि ये उनके लिए अजीब और शर्मिन्दगी की बात थी/

**डॉ. जॉन एन्करबर्ग:** आपने कहा एक और दर्शानेवाली बात, इस खाली कब्र के सच्चे होने के बारे में, कि शुरू के चेलों के जो शत्रु थे उन्होंने खाली कब्र के बारे में अनुमान लगाया था, ये किस बारे में कहता है?

**डॉक्टर विलयम लैन क्रेग:** मै कह रहा हूँ कि यहाँ मत्ती के अध्याय 28 में जो बताने की कोशीश की गई है, कि बताए कि शुरू के चेलों को यहूदी लोगों ने क्या प्रतिउत्तर दिया था, यीशु के पुनरुत्थान की घोषणा के बारे में/ यहूदी लोग क्या जबाव दे रहे थे जब चेले इसकी घोषणा कर रहे थे, "वो मुर्दों में से जी उठा है?" तो वो कहेगे उसकी देह तो अभी भी वाटिका के उस कब्र में है? या "ये लोग नया दाखरस पिए हैं? नही, वो कह रहे थे, कि चेले रात के समय आए, और उन्होंने उसकी देह चुरा ली/ अब कुछ पल के लिए इसके बारे में सोचिए, कि चेले रात को आए, और उसकी देह चुरा ली/ पुनरुत्थान की घोषणा के बारे में शुरू का यहूदी प्रतिउत्तर तो अपने आप में बता रहा था कि देह वहां क्यों नही थी? तो यहूदी अधिकारियों ने खुद को इस में जोड़ा इस आशाहीन परिस्थित में बताने की कोशीश कर रहे थे, ये खाली कब्र/ ये सबूत है खाली कब्र के एतिहासिक होने के लिए/ ये तो पूरी तरह से मुख्य है, क्योंकि ये शुरू के मसीही चलन से नही आता है, लेकिन मसीही लोगों के शत्रुओ से आता है जिन्होंने खुद इस बात की गवाही दी कि देह चली गई है/

**डॉ. जॉन एन्करबर्ग:** अद्भुत है, चलिए तीसरे सत्य को देखते हैं,आपने कहा कि तीसरा ऐतिहासिक सत्य जिसे बहुत से दोष निकालनेवाले स्वीकार करते हैं, याने बहुत से अवसर पर अलग अलग परिस्थिति में, अलग अलग

लोग और लोगों के समूह ने यीशु के मुर्दों में से जी उठने के बाद उसके प्रकटीकरण का अनुभव किया है/ ये अद्‌भुत है कि दोष निकालनेवाले इस सच्चाई को मानते हैं/

**डॉक्टर विलयम लैन क्रेग:** और ये ऐसी सच्चाई है जॉन जो मैं सोचता हूँ कि दोष निकालनेवाले इतिहासकार इसे सौ प्रतिशत मानते हैं, मुझे कोई याद नही जो इनकार करे, याने यीशु को जीवित देखने के बारे में, इसके लिए एक कारण है कि पौलुस बहुत से आँखों देखे गवाहों की सूचि देता है, इस शुरू के मसीही परंपरा में, ग्रीस के कुरिन्थियों के अपने पत्र में लिखता है/ और इसका अंतिम वाक्य ये कहता है कि फिर कैफा पर प्रकट हुआ जो पतरस के लिए अरेमिक शब्द है/ जो मुख्य चेला था, और 12 पर प्रकट हुआ/ मतलब 12 चेलों पर/ फिर पौलुस अपने शब्दों में जोड़ता है, और भी गवाह, फिर 500 से भी अधिक भाइयों पर एक साथ दिखाई दिया, जिनमे से बहुत से अब तक जीवित हैं, पर कुछ सो गए/ फिर वह याकूब को दिखाई दिया, ये तो यीशु का छोटा भाई था/ और यरूशलेम में चर्च का लीडर था,और फिर पौलुस कहता है कि सब चेलों पर प्रकट हुआ/ सब के बाद मुझ को भी दिखाई दिया, जो मानो अधूरे दिनों का जन्म हूँ/ मुझ पर भी प्रकट हुआ/

और ये सब जानकारी के इतने शुरू में, साथ ही पौलुस का पतरस और याकूब जैसे लोगों के साथ व्यक्तिगत संबन्ध था/ हर नए नियम का विद्वान् मानता है, इन लोगों ने और समूहों ने यीशु की मृत्यु के बाद उसके प्रकटीकरण का अनुभव किया है/ अब लोग कोशीश करते हैं कि इसे भ्रम के रूप में बताए, यदि चाहे तो, लेकिन सच में इसका इनकार नही कर सकते हैं कि ये नही हुए थे/

**डॉ. जॉन एन्करबर्ग:** सी एच डॉड ने भी इसी सच्चाई के बारे में बताया था, इसके बारे में बताइए/

**डॉक्टर विलयम लैन क्रेग:** खैर ये बहुत ही दिलचस्प है कि पौलुस केबल 500 भाइयों के सामने प्रकट होने के बारे में ही नही बताता है/ लेकिन वो इसके बारे में कहता है उन में से बहुत से अब भी जीवित हैं/ तो कुछ सो गए हैं, अब उसने ये क्यों जोड़ा? खैर एक गुण था, प्राचीन ऐतिहासिक लेख का, कि वो आँखों देखे गवाह की सूचि बनाए, जिनके पास पूछनेवाले जाकर बात कर सके, इन घटनाओं के बारे में, याने पौलुस इस तरह से कहता है कि ये गवाह वहां हैं कि सवाल पूछे/ पौलुस जानता था कि ये गवाह अब भी जीवित हैं, और हम कह सकते थे कि ये केवल उसके भाग से देखना ही नही, क्योंकि वो जानता था कि कुछ मर गए हैं, और वो ये बताता है, लेकिन दूसरे अभी भी जीवित थे और उन से पूछ सकते थे, कोई भी पूछ सकता था कि उन्होंने क्या देखा है?

**डॉ. जॉन एन्करबर्ग:** बिल, हमें बताइए यीशु के छोटे भाई याकूब के बारे में, वो इतना महत्वपूर्ण विद्वान् क्यों था कि उसका नाम इस सूचि में है?

**डॉक्टर विलयम लैन क्रेग:** ये तो बहुत अद्‌भुत है, जॉन, कि इस बड़ी सूचि में, याकूब का नाम है जो यीशु का छोटा भाई था, ये बहतु अद्‌भुत है क्योंकि न तो याकूब और न यीशु के दूसरे छोटे भाई, उसके जीवनकाल में उस पर विश्वास नही करते थे, वो नही सोचते थे कि वो मसीहा है/ उन्होंने नही सोचा कि ये भविष्यवक्ता है, उन्होंने इसे कोई विशेष नही जाना, सुसमाचार की कुछ कहानियों में हम देखते हैं कि उन्होंने सोचा कि यीशु तो पागल है/

और फिर भी प्रेरितों के काम में, अचानक ही यीशु का परिवार उपरी कोठरी में आता है/ दूसरे विश्वासियों के साथ आराधना करते हैं, और फिर याकूब आगे जाकर एक अगुवा बनता है, नए नियम के चर्च में, वो आगे जाकर चर्च का मुख्य अगुवा बनता है, यरूशलेम में, हम याकूब के बारे में यही सुनते हैं, नए नियम में लेकिन जोसिफ्स से, जो यहूदी इतिहासकार थे, हम सीखते हैं कि याकूब जो यीशु का छोटा भाई था, वो अपने विश्वास

के कारण शहीद हुआ, इसवी सन 60 के मध्य में, उस सिविल सरकार में बदलाव आया और सेन्हीडरन ने उसे अनैतिक रूप में पत्थरवाह कर मार डाला/

अब इस बारे में सोचिए, किस कारण याकूब एक अविश्वासी होने से बदलकर, याने अपने बड़े भाई में दोष निकालनेवाला था, उससे बदलकर मरने के लिए तैयार हो गया कि यीशु मसीहा है ये विश्वास करने पर/ केवल यीशु के क्रुसिकरण ने ही याकूब के मन को बदल दिया होगा, कि उसका बड़ा भाई भरमानेवाला नही है, देखिए यही कारण हो सकता है जिससे याकूब में बदलाव आया, जैसे पौलुस कहता है, फिर वो याकूब पर प्रकट हुआ/

अब, हम लोगों के भाई होते हैं, आपको ये विश्वास करने के लिए क्या लगेगा कि आपका भाई प्रभु है, कि आप उस विश्वास के साथ मरने के लिए तैयार होगे? इसके कोई संदेह नही कि याकूब के जीवन में ये बदलाव यीशु के मुर्दों में से जी उठने के कारण ही हुआ था?

**डॉ. जॉन एन्करबर्ग:** चौथा ऐतिहासिक सत्य, ये क्रिटिकल ऐतिहासिक हायपोथेसेस है, यीशु नासरी के बारे में, इसे इस तरह से बताया जाता है, कि ये तो शुरू से ही चेलों ने विश्वास किया कि परमेश्वर ने यीशु नासरी को मुर्दों में से जीवित किया है/ इसका क्या अर्थ है?

**डॉक्टर विलयम लैन क्रेग:** ये तो बिना विवाद करनेवाली एतिहासिक बात है/ जिसे नए नियम के सारे इतिहासकार मानते हैं, कि यीशु के शुरू के अनुयायी, इमानदारी से और अचानक ही ये विश्वास करने लगे, कि परमेश्वर ने यीशु को मुर्दों में से जिलाया है, अब हम किस तरह से बता सकते हैं, इस अद्भुत विश्वास के बारे में/ ये विश्वास तो यहूदी नही था, यहूदी सोच के अनुसार, मसीहा को मारा जाना नही था, उसे तो यरूशलेम में दाऊद के सिंहासन को स्थापित करना था, यीशु का क्रुसिकरण तो शुरू के चलों के लिए पूरी विपदा थी, ये तो उनके लिए असंभव था, कि ये विश्वास करते रहे कि यीशु ही मसीहा है/ जब कि उसका क्रुसिकरण हुआ और वो गाढ़ा गया है/

दूसरी बात, यहूदी बाद के जीवन के बारे में विश्वास करते हैं, और खासकर किसी का मुर्दों में से जी उठना महिमा और अमरत्व में, वो भी संसार के अंत में जो समान्य जी उठना होगा उससे पहले/ यीशु का दू:ख उठाना और मृत्यु और कब्र में रखा जाना, तो चेलों ने अपने स्वामी की कब्र को बचाकर रखना था, जिस पर श्राईन या तीर्थस्थान बनाया जाता, जहाँ वो संसार के अंत में समान्य जी उठने की राह देखते, जब वो और उनका स्वामी एक साथ मिले/ परमेश्वर के राज्य में, वो ये विश्वास करने लगे थे कि वो पहले से ही जी उठा है, ये तो यहूदी विचार के विरुध्द में था, अपनी ही खुद की दृष्टी में/

और फिर भी इस पर बहस नही हो सकती है कि ये शुरू के चेले ये विश्वास करने लगे, कि परमेश्वर ने यीशु को मुर्दों में से जीवित किया है/ इसके पहले बताए सभी विचारों के बावजूद/ मुझे ये ऐसे दिखता है कि सबसे अच्छा विवरण, कि चेलों में इस तरह से अद्भुत रूप में बदलाव आए/ वो यही है कि उन्होंने विश्वास किया कि परमेश्वर ने यीशु को जिलाया है/ और इस कारण ये विश्वास करना संभव होता है कि यीशु ही मसीहा था, और उन्होंने यीशु के जी उठने को देखा, जो पहले हुआ है हमारे सामान्य जी उठने से पहले, जो कि संसार के अंत में होगा/

याने हमने 4 सत्य को देखा जिसे सामान्य रूप में माना जाता है, आज के ऐतिहासिक समाज के द्वारा, केवल एक ही सवाल है कि इसे सबसे अच्छी तरह से कैसे बता सकते हैं? पुरे इतिहास में दोष निकालनेवाले विद्वानों ने बहुत से हायपोथसेस बनाए हैं, जैसे चेलों ने देह चुरा ली है या यीशु सच में मरा नही था/ और ये सब पुरे संसार में इनकार की गई है, महान विद्वानों के द्वारा, सच ये है कि कोई भी स्वाभाविक विवरण नही हैं, इन सच्चाई के,

इसलिए मैं सोचता हूँ कि विश्वासी अपने अधिकार में बहुत अच्छी जगह पर हैं, ये विश्वास करते हुए कि परमेश्वर ने यीशु क ओ मुर्दों में से जिलाया/ और इसलिए यीशु वही है जो उसने होने का दावा किया है/

यीशु का क्रुसिकरण निश्चित किया गया था उस पर दोष लगानेवाले निन्दा कह रहे थे कि वो मसीहा है, परमेश्वर का पुत्र, मनुष्य का पुत्र है/ यदि इस मनुष्य को, परमेश्वर ने मुर्दों में से जीवित किया है, तो परमेश्वर ने सब के सामने और असमानता में जिन लोगों ने निन्दा की है उनको सही बताया है, जिसके लिए उसे क्रूस पर चढाया गया है, याने यीशु का जी उठना परमेश्वर का आलौकिक काम था, ये दर्शाता था कि यीशु सच में कौन है/

**डॉ. जॉन एन्करबर्ग:** अब दोस्तों, आप ये अद्भुत जानकारी सुनते रहिए, यदि बुद्धिमत्ता से आप निर्णय लेते हैं कि यीशु ने परमेश्वर का पुत्र होने का दावा किया, मसीहा होने का दावा किया, मनुष्य का पुत्र होने का दावा किया है, सबूत तो उसका पुनरुत्थान था, ये तो सच में हुआ है, तो फिर आप यीशु के साथ क्या करेगे? यीशु ने आपके पापों के लिए दाम चुकाया, यदि आप अपने विश्वास उसमे रखते हैं, उसके पास आते हैं, तो वो आपका जीवन बदल देगा, वो आपके जीवन में आकर आपको बचाएगा और मैं आपको सलाह देता हूँ कि उसे गंभीरता से ले, जो आपने इस प्रोग्राम में सुना है/ और फिर प्रभु के पास आए, और उससे कहे कि आपका प्रभु और उद्धारक हो जाए/

डॉ. क्रेग मैं आपका धन्यवाद करता हूँ कि आप आए और हमारे साथ ये प्रोग्राम किए हैं, मैंने इसका आनंद उठाया है और दोस्तों यदि आप जानना चाहते हैं, कि ये सब जानकारी कैसे पाए तो बने रहिए हम आपको बताएगे/

****

हमारे टीवी प्रोग्राम देखने के लिए मुफ्त में डाऊनलोड कीजिए जॉन एन्करबर्ग ाो एप

"घ्द्धठ्ठन्र् द्यद् ठ्ठड़ड़ड्ढद्रद्य ख्ड्ढद्मद्वद्म क्ण्द्धत्द्मद्य" ऋ ख्ऋद्मण्दृध्र्.दृद्धढ

@JAshow.org

क्दृद्रन्र्द्धत्ढ़ण्द्य 2015 ऋत्र्ड्ढक्ष्